5

चलो जामुन खाने

ज्योतिभाई देसाई*

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों के अनुभवों को शामिल करने से सीखना बच्चों के लिए सरल और सहज बन जाता है। केवल किताबी ज्ञान जहाँ बच्चों के लिए कभी-कभी नीरस और बोझिल हो जाता है, वहीं उनके परिवेश से जोड़ते हुए सीखने के अवसर उन्हें मिलें तो बच्चों के लिए सीखना आनंददायी हो जाता है। किस प्रकार से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को बच्चों के दिन-प्रतिदिन के अनुभवों से जोड़ा जाए, जानने के लिए पढ़िए यह लेख – 'चलो जामुन खाने'।

'भाई जी** तालाब पर जामुन हुए हैं ना, वहाँ जामुन खाने जाना चाहिए। आज पूरा दिन क्यों न वहाँ बिताएँ?' बच्चों ने मिलकर आवाज़ उठाई।

मेरे पाँचवे दरज़े के बच्चों को अब यह भा गया था। रोजाना स्कूल में क्या होगा यह बच्चे खुद तय करें, यह रिवाज़ वे समझ चुके थे। अत: यह जामुन खाने के प्रोग्राम का प्रस्ताव बच्चों ने पेश कर दिया।

''यह तो सुंदर विचार है। पहले थोड़ा सोच लें।'' मैंने कहा। 'भाई जी यह क्या कहते हो? जामुन खाने जाने में भी क्या सोचने की बात करते हो आप?' गोविन्द ने फट से पूछ लिया।

हमारी तनु बहन हमेशा तैयार उत्तर देतीं, 'यह भी तो तय हुआ है कि हम हर बात के लिए सोच लगाएँगे, फिर भी तुम पूछते हो? यह भी तो है ना कि हमारी कक्षा में हमारे साथ श्रीधर है। उसका एक ही पैर ठीक है और दूसरे पैर की जगह वह एक लकड़ी का आधार लेकर चलता है। दौड़कर हमें पीछे छोड़ भले देता हो, पर महादेव मंदिर के तालाब तक जाने में वह थक भी जावेगा न? उसके बारे में भी सोचना है ना।' 'मान गए चलो, हम श्रीधर को ही अपना आज का लीडर बनाएँगे। उसकी गति से ही चलेंगे। कोई आगे नहीं निकलेगा', सगराम ने मानों हुक्म दिया।

''और अधिक क्या सोचना चाहिए?'' मैंने पूछा, 'आप ही बताइये ना' पाँच-छह विद्यार्थी बोल पड़े। ''देखो, हम सब साथ मिलकर सोचते हैं तो सबके सुझावों का उपयोग होता है। किसी एक के कहने पर बात पक्की नहीं करते

* गांधी विद्यापीठ, बेड़छी-394641, गुजरात

** बच्चे अपने शिक्षक को भाई जी कहकर संबोधित कर रहे हैं।

हैं। साथ सोचने में बहुत सारे सुझाव आवेंगे। उन्हें लेकर उसमें से उचित विचार को और सबको जाँचने वाला स्वीकार कर अमल करें तभी अच्छे काम हो पाएँगे। मेरे मन में कोई विचार आए और आप सब वही करें तो यह मनमानी होगी... '' मैं बोल रहा था। वहीं कशमीरा टपक पड़ी। 'आप गुरूजी हैं ना! तो आप जो कहें वह करना चाहिए ना।'

दो तीन लड़के लड़कियाँ हँसने लग गए। 'ये लो अभी वही पुरानी तान पकड़े हैं। अब हम पाँचवें दरज़े के बच्चे हैं। ये नए भाईजी हमें जो करवाते हैं उसकी पहचान ही इन्हें नहीं। कशमीरा तू पगली है।'

''सुनो जी कशमीरा का ऐसे फ़टकारना और उस पर हँसना ठीक नहीं। उसको समझना है। बड़ों की बात नहीं माननी है, ऐसा तो है नहीं। हाँ, इतना समझना ज़रूरी है कि सबको जँचे ऐसा काम करे तो काम में अपनापन आता है। सोच लेना तो ज़रूरी है। अब जामुन खाना तो तय हुआ'' मैंने जाहिर कर दिया। बचु तब बोल पड़ा 'अरे चलो जी, सोच-सोचकर क्या करना है। यह सोच की झंझट बेकार...।' 'अरे बहादुर बाशींदे। हम भाईजी के विद्यार्थी हैं ना। उन्होंने आज तक कभी डाँटा नहीं, न गाली दी है और हम जो सुझाते हैं वैसा ही हमारी कक्षा में हो रहा है। यही बात लो, ''जामुन खाना तय हो गया।'' मना थोड़े ही करते हैं? हम जब जामुन खाने स्कूल के परिसर से निकलेंगे तब आचार्य महाशय दिनुभाई तो आग बबूला होने वाले हैं। बड़ा मज़ा आएगा यार।' उस्मान ने कह दिया।

(ऐसी प्रारंभिक चर्चा हमारी पाँचवीं कक्षा में हुई। दिनुभाई जी की नाराजगी कम रहे ऐसा बर्ताव करने का भी सोचा गया। स्कूल से निकलने लगे। तब तक 'जामुन खाने' की बात स्कूल भर में फैल गई थी। यह तो हमेशा की बात होने लगी थी कि आज पाँचवीं दरज़े वाले क्या करने वाले हैं। उस पर पूरे स्कूल के 253 बच्चों का ध्यान रहता था और डूडूडूडू करते बाकी कक्षा के बच्चे भी जामुन खाने की टोली में जुड़ने लगे।)

दो शिक्षिकाएँ, दो शिक्षक और दिनुभाई जी अवाक् रह गए! दिनुभाई जी मेरे पास आए 'यह क्या तमाशा किया जा रहा है। आपके ये सारे प्रयोग हमें कहाँ ले जाएँगे? मुझे बहुत परेशानी हो रही है। आप पहले मेरे साथ बात तो कर लेते।'

मैंने कहा ''श्रीमान् जी, बच्चों ने सुझाया, उनके ध्यान में जामुन पके हैं आना तो सहज था न? तो कौन नहीं लालायित होगा।''

'जामुन खाना है तो स्कूल में आने की ज़रूरत कहाँ है? गाँव को मुझे उत्तर देना पड़ेगा, महाराजा स्कूल में पढ़ना है या यही सब अंटसंट बातों में फिज़ूल समय बर्बाद करना है', दिनुभाई का रूख कड़क हो गया था।

''आप धैर्य रखिए। आज हमारे साथ चलिए। आप भी जामुन खाने का मज़ा लीजिए'' मैंने कहा।

ऐ मास्टर ऐसे पाठ्यक्रम पूरा होना संभव नहीं। तुम्हारी यह बातें नवल भाई जी (आश्रम के संचालक) का आदेश होने की वजह से निभाता रहा हूँ। पर आज तो हद ही हो गयी। पूरे स्कूल के बच्चे स्कूल छोड़कर जा रहे हैं

जामुन खाने। तुम शहर से आए हो। यह तुम्हारे बम्बई के बच्चें नहीं है। यहाँ गाँव भर में चर्चा होगी। सारे उत्तर देने की ज़िम्मेवारी मेरी होगी और कहीं शिकायत हो गयी तो इंस्पेक्टर जी भी आ धमकेंगे। तुमने कैसे-कैसे कठिनाइयाँ मेरे पल्ले में डाल दी हैं। कुछ तो सोचो।'

''देखिए, दिनुभाई जी, मैं ऐसा विचार लेकर चल रहा हूँ कि हर बच्चा सीखना चाहता है शिक्षा ली जाती है, कभी दी नहीं जाती''

'ऐ महाशय। भूल जाओ अपनी सारी फ़िलॉसाफ़ी और शास्त्रों की बात। किसी को सुधारना मुश्किल है। इन्हें समझने में मैंने 20 साल बिताए हैं।' दिनुभाई पूरे बिगड़ बैठे।

''भाई जी, अभी बहस का समय नहीं है। बच्चे बहुत आगे चले गए हैं। उनके साथ पहुँचा जाए यह आवश्यक है। आपसे विनती करता हूँ, हमारे साथ आइए और जामुन खाने का मज़ा लें। आज का खेल देख लीजिए। स्कूल के बारे में भी सोचने के लिए बैठना अवश्य पसंद करूँगा।''

बड़ी मुश्किल से दिनुभाई मान गए और हम सब शिक्षकगण तालाब पर पहुँचे। हमारी कक्षा का सगराम भले ही पाँचवें दरज़े का विद्यार्थी हो पर वह नज़दीक के गाँव 'भूरखी' की पंचायत के मुखिया का लड़का था। हमेशा की तरह सारी व्यवस्था का जिम्मा अपने सिर पर लिए था। सब जामुन एकत्र हो रहे थे। कोई बच्चा जामुन खा नहीं रहा था।

'यह क्या है? ऐसा क्यों कर रहे हो?' शिक्षिका जया बहन पूछ बैठी। 'हरेक बच्चे को जामुन मिले यह आवश्यक है ना और पहली से तीसरी कक्षा के छोटे बच्चों को सबसे पहले जामुन पहुँचाएँगें। वे खुद पेड़ से थोड़े ही ले सकेंगे। छठवीं और सातवीं कक्षा के लड़के-लड़कियाँ पेड़ से लावेंगे। सारे जामुन एकत्र करेंगे। गिने जावेंगे और बाँटे जावेंगे।'

''काम करो ...तिरथ करो ...बाँट के, खावो बंदे।''... गाते हैं ना? हमारी तनु बहन ने सफ़ाई दी।

देखते-देखते शिक्षकगणों के सामने बात खुलती गयी। जिस उत्साह और आनंद से जामुन एकत्र करना, गिनना आदि चल रहा था। उनका नज़रिया बदलता जा रहा था।

चौथे दरज़े के बच्चे दोने (जामुन रखने वाले दोने) बनाने लग गए थे। वहीं दोनों शिक्षिका बहनें उन बच्चों के साथ दोने बनाने में लग गयीं। उनसे बाते करते-करते वह भी खुलकर हँसते हुए अच्छे-से-अच्छे दोने बना-बना कर दिखाती रहीं।

पाँचवें दरज़े के बच्चे एकत्र हुए जामुनों को अलग-अलग छांटने में लग गए-

1. अच्छे-से-अच्छे, पूरे पके हुए, खाने योग्य।
2. फूटे-फाटे हुए
3. कच्चे
4. सड़े हुए।

सब अलग-अलग ढेर बनाए जा रहे थे। छोटे बच्चों को गिनने का काम मिला था। खाने योग्य जामुन कितने हैं? हम सब बच्चे कितने हैं? हरेक को कितने जामुन दे सकेंगे? कितने शेष बचेंगे?

'भाई जी, हमारे दिनुभाई जी और आप सबको भी तो देने हैं ना' कश्मीरा कह रही थी। ''ठीक है बेटी'' दिनुभाई बोल पड़े।

अब सड़े हुए जामुनों की जाँच हुई। क्यों सड़े? सड़ा हुआ भाग कहाँ है आदि। ललिता बहन (शिक्षिका) पूछने लगी 'किस पेड़ से सबसे अधिक जामुन मिले हैं? और उससे ही क्यों मिले? क्यों किसी पेड़ से बहुत कम मिले? यह भी पूछ-ताछ होने लगी।

'बहन जी यह आखिर बड़ का पेड़ है ना! थोड़े दूर सटा हुआ पर बहुत अच्छा फैला है। इसे पानी भी और जगह भी ठीक मिली है। उसके जामुन तो अव्वल ही हैं और ढेर भरे हुए हैं।' सातवें दरज़े के उस्मान ने कहा।

हर बच्चे को जामुन खाकर बीज रख लेने का सुझाव दिया गया। कहीं फेंकना न था। हर बच्चा बीज घर ले जावेगा और उन्हें बोने की भी बात उभर कर आयी तब दिनुभाई पूछने लगे, 'जामुन का पेड़ तालाब के किनारे ही होता है या और जगह पर भी?' छठवें दरजे के, बगल के अँग्रेंज़ गाँव से आने वाले जेसंग ने कहा, 'हमारे यहाँ कुँए के पास भी तो बहुत अच्छा मोटा जामुन का पेड़ है। मेरी माँ तो जब ट्रेन आती है, तब बेचने भी जाती है। जहाँ पानी ठीक होगा वहाँ पर जामुन के पेड़ हो ही जाएंगे।' तब जामुन बाँटे गए। पहले दोने गुरूजनों को दिए गए। हर बच्चे को केवल 15 जामुन ही खाने देना संभव हुआ। पर कोई बच्चा बिना जामुन के न रहा। अब तो गाने भी शुरू हुए।

जामुन खाए बाँट के
जामुन खाए जाँच के
जामुन बोए गाँव में
जामुन खाए सबने
नाचे कूदे प्यार से

खूब खेले, नाचना भी हुआ और जामुन खाने का उत्सव भी महादेव मंदिर के तालाब के परिसर में जम गया। पूरा माहौल उत्साह, सहकार और प्रेम से भर गया। मंदिर के पुजारी जी भी खुश हो गए। बहुत दिनों बाद चहल पहल हुई थी। पुजारी जी ने सबको आर्शीवाद दिया 'यहाँ बच्चे आए तब तो इस स्थान की रौनक बढ़ती है ना।'

दिनुभाई मेरे पास आए। कहने लगे 'शिक्षा आनंदमय हो, यह कैसे हो सकता है इसका अव्वल नमूना आज मुझे प्राप्त हुआ है। मैं आभारी हूँ। क्या हम शिक्षक, शिक्षिकाएँ आपके साथ कभी बैठकर अपनी ''जीवनशाला'' स्कूल को जीवंत बनाने के बारे में सोचने बैठ सकते हैं।'

❑❑❑